⑥ 28/4/20

Date __/__/__

बस्ती या मुहल्ले में रहने की आज्ञा नहीं थी। न केवल अस्पृश्यों को बल्कि शूद्रों तक को शिक्षा प्राप्त करने की आज्ञा नहीं दी गई। न केवल इन्हें चौपालों, मेलों तथा हाटों में शामिल होकर अपना मनोरंजन करने का अधिकार नहीं दिया गया। परिणाम यह हुआ कि समाज का एक वृहत् बड़ा वर्ग निरक्षर रह गया। एक आश्चर्यजनक बात तो यह है कि स्वयं अस्पृश्यों में भी संस्तरण की प्रणाली अर्थात ऊँच-नीच का भेदभाव पाया जाता है गया है। ये अस्पृश्य लोग तीन सौ से अधिक उच्च एवं निम्न जातीय समूहों में बँटे हुए हैं जिनमें से प्रत्येक समूह की स्थिति एक दूसरे से ऊँची अथवा नीची है। इस सम्बन्ध में के० एम० पणिक्कर का कहना है कि "विचित्र बात यह है कि स्वयं अछूतों के भीतर एक पृथक् जाति के समान संगठन था यानी हिन्दुओं के समान इनमें भी वृहत् उच्च और निम्न स्थिति वाली उपजातियों का संस्तरण था, जो एक-दूसरे से श्रेष्ठ होने का दावा करती थी।" एक पृथक् समाज के रूप में अस्पृश्यों को अनेक सामाजिक निर्योग्यताओं से पीड़ित रहना पड़ा है। इस बारे में डॉ० पाणिक्कर ने लिखा है "जाति व्यवस्था जब अपनी यौवनावस्था में क्रियाशील थी, उस समय इन अस्पृश्यों की स्थिति कई प्रकार की दासता से भी खराब थी।"

३. आर्थिक निर्योग्यताएँ :— आर्थिक निर्योग्यताएँ के कारण अस्पृश्यों की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय हो गई कि इन्हें विवश होकर के झूठे भोजन, फटे-पुराने वस्त्रों एवं त्याज्य वस्तुओं से ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ी है। अस्पृश्यों को मल-मूत्र उठाने, सफाई करने, मरे हुए पशुओं को उठाने और उनके चमड़े से वस्तुएँ बनाने का कार्य ही सौंपा गया है। इन्हें खेती करने, व्यापार करने, शिक्षा प्राप्त कर नौकरी करने का अधिकार नहीं दिया गया। व्यावसायिक निर्योग्यताओं के अलावा इन्हें सम्पत्ति सम्बन्धी निर्योग्यताओं से भी पीड़ित रहना पड़ा।

४. राजनीतिक निर्योग्यताएँ :— अस्पृश्यों को राजनीति के क्षेत्र में भी सभी प्रकार के अधिकारों से वंचित रखा

Scanned with CamScanner

Date ___/___/___

गया। उन्हें शासन के कार्य में किसी भी प्रकार का कोई हस्तक्षेप करने, कोई सुझाव देने, सार्वजनिक सेवाओं के लिए नौकरी प्राप्त करने या राजनीति सुरक्षा प्राप्त करने का कोई अधिकार नहीं दिया गया। उनके लिए सामान्य अपराधों के लिए भी कठोर दण्ड की व्यवस्था थी।

अस्पृश्यों की उपर्युक्त निर्योग्यताएँ मध्यकालीन सामाजिक व्यवस्था से विशेष रूप से सम्बन्धित है। वर्तमान में अस्पृश्यों की समस्या प्रमुखत: सामाजिक और आर्थिक है न कि धार्मिक और राजनीतिक। इतने लम्बे समय से सभी प्रकार के अधिकारों से वंचित, निरक्षर तथा चेतना शून्य होने के कारण इनकी स्थिति में सुधार होने में लंबा समय लगेगा। इनके प्रति लोगों की मनोवृत्ति धीरे-धीरे बदलेगी और कालान्तर में ये सामाजिक जीवन की मुख्य धारा में प्रवाहित हो सकेंगे। अस्पृश्यों की निर्योग्यताएँ नगरों में समाप्त-सी होती जा रही है, परन्तु ग्रामों में आज भी दिखलाई पड़ती होती है। इसका प्रमुख कारण यही है कि ग्रामों में सामाजिक परिवर्तन की गति धीमी है, रूढ़िवादिता का अभी भी वहाँ बोलबाला है।

Date 05/4/19

अस्पृश्यता के परिणाम

1. **धार्मिक परिणाम** :— अस्पृश्यों की निर्योग्यता पर घातक प्रभाव पड़ा है क्योंकि अस्पृश्य जाति के अनेक व्यक्तियों ने अपना धर्म परिवर्तन करना प्रारंभ कर दिया है। ईसाई धर्म के प्रचार से बहुत से अस्पृश्य ईसाई बन गए हैं तथा काफी लोग मुसलमान भी बन गए क्योंकि ईसाई धर्म की भाँति मुसलमानों में भी अस्पृश्यता नहीं था।

(से हिन्दू समाज)

2. **सामाजिक एकता में बाधा** :— यह सच है कि भारत आपसी भेद-भाव के कारण पराधीन हुआ है क्योंकि अस्पृश्य जाति की अनेक लोगों ने एकता में निरंतर बाधा पहुँचायी है इसका लाभ विदेशी उठाते रहे हैं। अस्पृश्यता की भावना ने कभी सामाजिक समाजस्य उत्पन्न नहीं होने दिया है

Scanned with CamScan

Date ___/___/___

तथा दलितों का शोषण भी हुआ जिससे एक वर्ग अलग-अलग पड़ा रहा। जातिगत बॅंटवारी तथा भेद-भाव ने भारतीय समाज में कभी भी एकता की भावना मजबूत नहीं होने दिया।

iii. राजनीतिक फूट :— अस्पृश्यों की निर्योग्यता तथा जातिगत भेद-भाव का राजनीतिक पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। अस्पृश्यों ने अपने को अलग मान अपने पृथक मताधिकारों की माँग की। सन् 1931 में डॉ० अम्बेड़कर ने ब्रिटिश सरकार से गोलमेज कॉन्फ्रेंस के समय अछूतों के लिए अलग मताधिकार की माँग की तथा इसमें इन्हे सफलता भी मिली। किन्तु गाँधी जी के प्रयासों से इन्हे हिन्दुओं का ही एक अंग समझा गया।

iv. आर्थिक असमानतायें :— श्रमविभाजन जाति के आधार पर होने के कारण अस्पृश्य जाति के लोग केवल निम्न व्यवसाय ही कर सकते है इन लोगों को उच्च व्यवसाय को करने की अनुमति नहीं थी। खेती करने का भी अधिकार इन्हे नही था और न ही इन्हे अच्छी नौकरीयाँ भी नही मिल सकती थी। इस हेतु इनकी आय भी बहुत कम थी। ये लोग भर पेट खाना भी नहीं खा सकते थे जिसके फलस्वरूप समाज में आर्थिक असमानतायें पैदा हुई और आज भी अनुसूचित जातियाँ आर्थिक दृष्टि से अत्यंत पिछड़ी हुई है।

v. स्वास्थ्य का नीचा स्तर :— घृणित पेशों के कारण इनके जीवन पर काफी प्रभाव पड़ता था। ये लोग शहरों तथा गाँव के मध्य हिन्दुओं के बीच अपने मकान नहीं बना सकते थे जिससे गन्दी बस्तियों में रहने के कारण जीवन भर बुरा प्रभाव पड़ता था।

vi. अशिक्षा :— अस्पृश्य जातियों के व्यक्ति उच्च जाति के साथ नही बैठ सकते थे। जिसके कारण अस्पृश्य

Page No. ______

Scanned with CamScanner

के बच्चों को स्कूल में प्रवेश नहीं दिया जाता था। ब्राह्मण लोग शिक्षा देना धर्म के विरुद्ध समझते थे। ये लोग शत प्रतिशत अशिक्षित होते थे तथा अनुसूचित जातियों में शिक्षा का स्तर उच्च जातियों की अपेक्षा काफी निम्न है।

अस्पृश्यता को दूर करने के संबंध में सुझाव

1. **शिक्षा का प्रसार :—** हरिजनों में शिक्षा का अधिक प्रयास किया जाना चाहिए। ये क्योंकि आर्थिक निर्धन होते हैं अत: इन्हें निःशुल्क शिक्षा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए इसके अतिरिक्त इन्हें पुस्तकें, लिखने की सामग्री आदि भी मुफ्त में देनी चाहिए। इनके लिए विशेष छात्रवृत्ति की भी व्यवस्था की जानी चाहिए। इन्हें इनके लिए सामान्य शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा देने की भी व्यवस्था की जानी चाहिए।

2. **नौकरियों में आरक्षण :—** सदियों से पिछड़े रहने के कारण हरिजन उच्च लोगों की तुलना में सरकारी नौकरियों में अधिक स्थान प्राप्त नहीं कर सकते, अत: जब तक इनकी स्थिति में काफी सुधार न हो जाए इनके लिए केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारों की नौकरियों में पर्याप्त पद आरक्षित या सुरक्षित रखे जाएं।

3. **विधान सभाओं में स्थान सुरक्षित :—** जब तक हरिजन ऊँची जातियों के बराबर प्रगति न कर लें, तब तक यह आवश्यक है कि इनके लिए लोक सभा तथा विधान सभाओं में स्थान सुरक्षित रखे जाएं।

४. आर्थिक सुधार के कानून :— हरिजनों के आर्थिक उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि विधान सभाओं में ऐसे कानून बनाए जाए जिससे वे सूद-खोरी, तथा बेदखली आदि से बच सकें।

५. आर्थिक एवं सामाजिक निर्योग्यताओं की समाप्ति :— हरिजनों की आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि इनकी समस्त आर्थिक एवं सामाजिक विकास के लिए निर्योग्यताओं को समाप्त किया जाए।

६. धार्मिक निर्योग्यताओं की समाप्ति :— अब स्वतंत्र भारत में हरिजनों को भी धार्मिक स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि कानून द्वारा इनकी धार्मिक निर्योग्यताओं को समाप्त किया जाए। इन्हें गृह उद्योग लगाने के लिए औद्योगिक प्रशिक्षण मिलना चाहिए तथा पर्याप्त आर्थिक सहायता भी दी जानी चाहिए।

७. अस्पृश्यता कृषि एवं गृह उद्योग में सहायता :— हरिजनों को कृषि कार्य करने के लिए जमीन, हल, बैल, बीज तथा खाद आदि मिलनी चाहिए।

८. अस्पृश्यता विरोधी प्रचार :— हरिजनों की दशा में सुधार लाने का सबसे महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि रेडियो, टेलीविजन, तथा फिल्मों आदि के माध्यम से अस्पृश्यता विरोधी प्रचार किया जाए और सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता की लहर फैलायी जाए।

९. जाति-प्रथा का उन्मूलन :— हरिजन समस्या वस्तुतः जाति प्रथा का ही एक अंग है

Scanned with CamScanner

Date ___ /___ /___

इसीलिए जाति प्रथा के अन्त के लिए प्रयास किये जाए इससे भी अस्पृश्यता उन्मूलन में सहायता मिले है।

10. ऊँचे हिन्दुओं और अस्पृश्यों के मध्य सम्पर्क :
सबसे महत्वपूर्ण सुझाव यह है कि अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए ऊँच हिन्दुओं और अस्पृश्यों के हृदय में एकता स्थापित हो वे एक-दूसरे के निकट आए और एक-दूसरे के कार्यों में सहयोग करें। जब तक उच्च हिन्दुओं और अस्पृश्यों के मध्य रूढ़ियों तथा परंपराओं की दृढ़ दीवारें बनी रहेगी, तब तक इनमें दरार पड़ी रहेगी। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा, प्रसार, कानून तथा सामाजिक सम्पर्क के माध्यम से इन दोनों वर्गों को परस्पर निकट लाया जाए और धीरे-धीरे सम्पूर्ण देश से अस्पृश्यता के कलंक को मिटा दिया जाए। वर्तमान में निरंतर इस दिशा में प्रगति हो रही है।

Scanned with CamScanner